❑व्यंग्य

सवाल शुद्धता रौ

डॉ. भगवतीलाल व्यास

लेखक परिचै

डॉ. भगवतीलाल व्यास रौ जलम 1941 में होयौ। आप अेम.अे., अेम.अेड. तक भण्योड़ा है। आप लारलै पांच दसकां सूं राजस्थानी साहित्य री सेवा कर रैया है। आप राजस्थानी में पद्य अर गद्य दोन्यूं विधा में लिखै। 'अणहद नाद', 'अगनी मंतर' अर 'सबद राग' आपरा चावा कविता-संग्रै है। कविता टाळ आप कहाणी अर व्यंग्य भी लिखै। आप राजस्थानी भासा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर री मासिक पत्रिका 'जागती जोत' रौ केई बरस संपादन ई करयौ। आपनैं के. के. बिड़ला फाउंडेशन कानी सूं 'बिहारी पुरस्कार', साहित्य अकादमी, दिल्ली कानी सूं 'राजस्थानी पुरस्कार', महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन, उदयपुर कानी सूं 'महाराणा कुंभा अवार्ड' अर राजस्थान रत्नाकर कानी सूं राजस्थानी पुरस्कार मिळ चुक्या है। इणां रै टाळ ई केई इनाम-इकराम। बरस 2014 में राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर कानी सूं आपरै व्यक्तित्व अर कृतित्व माथै मोनोग्राम छप्यौ।

पाठ परिचै

'सवाल शुद्धता रौ' व्यंग्य रचना आज रै आपा-धापी रै जुग में मिलावट माथै चोट करै। इणमें धणी-लुगाई रै पात्रां रै माध्यम सूं दूध री शुद्धता नैं लेयनै सामाजिक विसंगति रौ सांगोपांग व्यंग्यात्मक चित्राम उकेरण री कोसीस करीजी है। मिलावट री इण दुनिया में सामाजिक संबंध ई प्रभावित होवै है, इण कानी भी आ व्यंग्य-रचना इसारौ करै। लेखक व्यंग्य रै सायरै सामाजिक तानै-बानै रै सागै मिनख मांय पसरती खोट अर उणरौ सामाजिक अर मनोवैग्यानिक असर घणै सांगोपांग ढंग सूं बतायौ है। पुराणा अखाणां नैं उघाड़ता साच सूं परिचै करावै। पाठक रै मन में जथारथ रौ चानणौ करै। आज रै जुग री सब सूं मोटी समस्या मिलावट अर गिरावट है। इण रा दरसण हर ठौड़ निगै आवै। आलंकारिक भासा अर मुहावरैदार सैली घणी असरदार है। 'सवाल शुद्धता रा' रौ साचाणी आज रै जुग री मोटी अबखायी अर अबखौ सवाल ई है। हवा में भांग घुळण रौ कैयनै लेखक मिलावट रौ फैलाव अर प्रभाव बतावण री कोसिस करी है। व्यंग्य, हास्य, रोचकता आद विसेसतावां नैं अंगेजतौ औ व्यंग्य मिनख री सोच रौ साचौ चित्राम है।

सवाल शुद्धता रौ

आपां रै देस में दूध, दही रौ तोड़ौ नीं तौ पैलां कदैई रैयौ अर नीं आज है। जिका लोग दूध-दही रौ रोवणौ रोवै वै या तौ देस में हुयी श्वेत-क्रांति सूं अणजाण है या निहित स्वारथां सूं घिरयोड़ा है।

रैयी बात शुद्ध दूध री। शुद्ध दही तौ आपै ई मिळ जासी जे दूध शुद्ध होसी। जावण में कोई कित्तीक मिळावट करसी। सैंग रोळौ इण दूध री शुद्धता रौ इज तौ है। शुद्धता अेक भरम है। आ बदळती रैवै है। अबै पैलां जिस्यौ शुद्ध सोनौ ई नीं रैयौ तौ दूध-दही री कांई बात? आ तौ अपणी-अपणी समझ री बात है कै कोई शुद्धता रै मामलै में नब्बै प्रतिशत सूं नीचै समझौतौ ई नीं करणौ चावै तौ कोई पचास-पिचपन सूं ही काम सरा लेवै। आ बात तौ खराखरी है कै सौ प्रतिशत शुद्धता खाली विग्यापनां में इज देखी-सुणी जा सकै है।

विस्वास करावौ। म्हनैं तथ्यां नैं तोड़-मरोड़नै परूसवा रौ शौक कदैई नीं रैयौ। आप चावौ तौ इतिहास-पुराणां सूं प्रमाण दिया जा सकै। अबै इणी बात नैं इज लोग कैवै है कै पुराणै जमानै में घी-दूध री नदियां बैवती ही। आप ई सोचौ कै जे नदियां में घी-दूध बैंवतौ हौ तौ उणमें पाणी नीं मिळतौ हौ कांई? आ तौ हौ नीं सकै कै पैलां शक्तिशाली पम्प-सेटां री मदद सूं सगळा नदी-नाळा खाली करीजग्या व्हैला अर पछै उणां में घी-दूधां रा टैंकर खाली कीधा व्हैला। छनीक देर रै वास्तै आ बात मान भी लेवां तौ महताऊ सवाल औ उठै है कै नदी-नाळां सूं खाली कीधोड़ौ पाणी अेक दिन में तौ भाप बणनै आभै चढवा सूं रैयौ। अबै कठै रैयी शुद्धता री बात? वौ पाणी भूमिगत जळ रै रूप में पाछौ नदियां-नाळां में बैंवतै दूध-दही-घी में बावड़ियौ इज होसी! म्हैं इण सारू इज बजुर्गां नैं वीणती करूं हूं कै पल-पल में पुराणै जमानै री घी-दूध री नदियां रौ नांव लेयनै नूंवी पीढी में हीण-भावना मत भरौ। उणरौ मनोबळ मत गिरावौ। इण सूं म्हारी आतमा नैं घोर संताप पूगै है अर म्हैं सोचूं कै म्हैं इण जमानै में पैदा क्यूं व्हियौ?

घी-दूध री नदियां बहावण री बातां करणियां आ ई भूल जावै कै जे सगळी नदियां में घी-दूध ई बैंवतौ हौ तौ बापड़ौ जळ कठै बैंवतौ? कांई खेती-बाड़ी में सिंचाई भी घी-दूध सूं इज होया करती ही। लोग सिनान ई घी-दूध सूं ई करता होवैला वां दिनां में? प्राचीन काळ रा रिसी-मुनियां री दिनचर्या तौ सिनान सूं इज सरू व्हैती ही। जे जळ नीं हौ तौ वै कियां काम चलावता होसी? अै जबरा सवाल है, जिणरा उथळा दीधां बिना घी-दूध री नदियां बैय नीं सकै।

पुराणै जमानै में राजा जिकी गायां दान में दिया करतौ हौ, वांरा सींगड़ा सोना सूं मंढावतौ। सवाल औ है कै शुद्ध दूध अर स्वर्ण में कांई संबंध है? जे गाय रौ दूध महताऊ हौ तौ सोना सूं सींगड़ा मंढावण री कांई जरूत ही?

म्हैं कैवणौ औ चावूं हूं कै मिळावट दूध में नीं, दूध रा विचार में आदकाळ सूं आज तांई होवती रैयी है अर आगै भी होसी। औ अेक मनोवैग्यानिक साच है कै ज्यूं-ज्यूं मिळावट बधसी, त्यूं-त्यूं ई शुद्धता रौ आग्रह ई बधतौ रैसी।

शुद्धता रौ आग्रह अेक निजू मामलौ है। इणमें नेम-कानून आडा नीं आ सकै। म्हैं आपनैं घरबीती इज अरज करूं तौ सायद बात खुलासा व्है जासी। म्हारी होवा वाळी लुगाई फेरां रै समै इज आ सरत राख दी ही कै म्हैं उणरै सारू दूजी भलांई कोई सुख-सुविधा जुटा सकूं कै नीं जुटा सकूं, कोई चिंता नीं, पण शुद्ध दूध री जुगाड़ म्हनैं आजीवण करणी पड़सी। म्हारी मत मारी गी ही कै उण घड़ी म्हनैं आ सरत भोत मामूली-सी लागी अर म्हैं नाड़ हिलायनै मंजूर कर लीधी। म्हनैं कांई ठा ही कै इण घड़ी नाड़ हिलावणौ कितरौ मूंघौ पड़सी। साथै ई म्हनैं इण बात रौ गुमेज ई होयौ कै म्हारी लुगाई कितरी शुद्धतावादी महिला है।

म्हैं म्हारा यार-दोस्तां नैं घणै गरब सूं कैवतौ, ''यार, थांरी भाभी बिचारी कितरी सीधी-सादी है। बंगलौ, कार, फ्रीज, रंगीन टीवी जिसी किणी सुविधा री फरमाइस नीं करनै फकत दो किलौ शुद्ध दूध हमेस लावा री

फरमाइस कीधी है।'' अनुभवी भायला म्हारी बात सुणनै 'नो कमेंट्स' री मुद्रा धारयां मंद-मंद मुळकता रैवता। म्हनैं वां दिनां उण मित्रां माथै रीस ई आवती। म्हैं मन ई मन सोचतौ कै अै लोग भावात्मक दीठ सूं कितरा कृपण है कै म्हारी लुगाई रै त्याग अर सादगी री सरावणा में दो सबद ई नीं कैय रैया है। पण बाद में जद असलियत साम्हीं आयी तौ म्हैं खुद री अनुभवहीणता माथै मन मसोसनै रैयग्यौ।

होयौ इयां कै ज्यूं ई वा आणै आई, म्हारै दुरभाग रा दिन सरू व्हैग्या। दूजै ई दिन दूधवाळा री छुट्टी कर दीधी। घरवाळी री पारखी आंख्यां उण दूध में मिळ्योड़ै पचास प्रतिशत पाणी नैं अेक दिन में इज देख लियौ अर म्हैं इणीज दूध नैं खालस समझनै लारलै पांच बरस सूं सेवन कर रैयौ हौ। म्हैं समझावण री कोसीस कीधी, ''भागवान! औ स्हैर है। भागजोग सूं आपणौ दूधवाळौ सतगुणी है, जकौ आधौ पाणी ई मिळा रैयौ है। औ तीन चौथाई भी मिळाय देवै तौ ई लोग उण तरल पदारथ नैं दूध इज कैवैला अर दूध लावणिया नैं दूधवाळौ कैयनै इज हेलौ पाड़ैला।''

म्हारौ तरक तौ बोदौ नीं हौ, पण ठा नीं क्यूं, घरवाळी भूंडै ढाळै बिफरगी अर अगन री साखी में खायी सौगन री याद दिरायदी। वा बोली, ''देखौ, फेरां री वेळा थे आ प्रतिग्या करी ही कै शुद्ध दूध रौ बंदोबस्त करोला। जे नीं कर सकौ तौ कोई हरज कोनी। म्हनैं म्हारै पीवर भिजाय देवौ। बठै घणौ ई धीणौ है। म्हनैं म्हारा मायत इस्यौ दूध पीवा सारू थोड़ै ई उछेरी है। म्हनैं आज सिंझ्या रा ई भेज दौ।''

आप समझ सकौ हौ कै अेक नूंवी परण्योड़ी पैल आणै आयोड़ी कामण रौ इस्यौ 'अल्टीमेटम' मरद री मरजाद नैं जड़ामूळ सूं हिलायनै रख दिया करै है। उण दिन सूं म्हारै चैन-आराम रौ पत्तौ कटग्यौ। दो दिन रै सोध-सर्वेक्षण रै बाद घरवाळी जकौ फरमान जारी करयौ कै काल सूं इज दूध 'आदर्श डेयरी' सूं आसी। फरमान रै सागै ई डेयरी री कूपन-बुक थमायनै बोली, ''सुबै छह बज्यां पूग जाज्यौ दूध लेवण नैं। कैतली साफ करनै परेंडै धरदी है।''

म्हैं आठ बजी तांई सोवण वाळौ। छह बज्यां डेयरी पूगण रौ फरमान सुणनै कांपग्यौ। पण होणी नैं कुण टाळ सकै?

फरमान जारी कीधां पछै ई श्रीमती जी नचींत नीं व्है सकी। घड़ी में पांच बज्यां रौ अलारम भर दियौ अर बोली, ''अलारम बाजतां ई उठ'र त्यार व्हैज्यौ। कोई आधीक घंटौ तौ त्यार होवा में ई लागसी। आधीक घंटौ पूगण में अर लाइन में लागवा में। जद कठैई शुद्ध दूध रा दरसण होसी।''

अलारम टैम माथै बाजणौ इज हौ। वौ बाज्यौ। पण उठणौ तौ म्हारै हाथ हौ। म्हैं नीं उठ्यौ। वा उठगी। थोड़ी देर म्हनैं देखती रैयी कै म्हारौ कर्तव्यबोध जागै! पण म्हैं नीं उठ्यौ तौ वा समझगी कै म्हारौ कर्तव्य म्हारै सूं ई ज्यादा निद्राप्रेमी है। बस, फेर कांई हौ? अेक झटकै सूं रजाई खेंचनै सिंघणी री तरै दहाड़ी, ''अेऽऽजी, सुणौ कै नीं? दूध नीं लावणौ कांई?''

औ अेक सबद 'अेऽऽजी' इतरौ पावरफुल व्हैला, म्हैं कदैई कल्पना भी नीं कीधी ही। जाणै कठां सूं म्हारै नींदाळू डील में गजब री फुरती बावड़गी। म्हैं उठ्यौ अर चपलां पैरतौ बोल्यौ, ''केतली कठै?''

केतली आई। डेयरी सूं दूध भी आयौ। सागै ई आयग्यौ जुकाम। चार दिन री सी.अेल.। डेढ-दो सौ रुपिया दवा-दारू में। म्हैं सोची, अब तौ सायद छुट्टी मिळ जासी डेयरी-जातरा सूं। पण छुट्टी म्हारै भाग में कठै? हां, थोड़ी रियायत मिळगी। संशोधित फरमान जारी होयौ— ''छह बज्यां री जगां सात बज्यां डेयरी पूगौ अर दूजी खेप सूं दूध लावौ।''

म्हैं संशोधित आदेश रौ पालन सरू कर दियौ। पण नंबर दो री खेप रौ दूध घरवाळी री पारखी आंख्यां में नंबर दो री कमाई ज्यूं अखरवा लागौ अर अेक दिन घोसणा होई— ''शुद्ध दूध रै खातर गाय राखांला। न डेयरी जावण

रौ झंझट अर न शुद्धता रौ संकट! घर री गाय व्है तौ दूध ई मन माफिक वापरौ। पीयौ अर पावौ। बच जावै तौ जावण न्हाख दौ। छाछ फेरौ। घी काढौ। जांका घरै दोझा वांका घर सोझा।'' घरवाळीजी घर री गाय रा गुणानुवाद अेक सांस में इण तरै करगी जिण तरै विग्यान रौ कोई छात्र फार्मूलौ बोल जावै अर अणमणियौ उणरै मूंछां कानी टक-टक न्हाळतौ रह जावै।

घरवाळी जी आपरै पिताश्री नैं संदेसौ भेज दियौ। पांचवैं दिन गाय हाजर। सागै ई ग्वाळ भी हाजर। बारह-तेरह बरस रौ अेक छोरौ। घरवाळी रै दूर रै रिस्तै में भतीजौ।

इण नूंवी व्यूह रचना नैं देखनै म्हनैं भावी विपत्ति रौ अनुमान व्हैतां देर नीं लागी। पण करयौ कांई जा सकै। जे म्हैं लगन मंडप में इज अै सगळी बातां सोच लेवतौ तौ कितरौ चोखौ होवतौ? घरवाळी सायद म्हारी मनस्थिति भांपगी। बोली, ''गाय किसीक लागी? ठीक है नीं? न घणी मोटी, न छोटी। पूळै भूखी अर पूळै धापी। घर में गाय राखणौ सास्त्रां में ई पुन्न रौ काम बखाणीज्यौ है। दिनुगै-दिनुगै ई गोमाता रा दरसण। धन्न भाग! म्हैं थांनै कैवूं हूं कै थे रोज गोमाता रा सगुन लेयनै दफ्तर पधारज्यौ। थांरी रुक्योड़ी तरक्की छह महीनै में नीं मिळ जावै तौ म्हनैं कैईज्यौ।'' कुसळ ज्योतसी री तरै घरवाळी म्हनैं सब्जबाग दिखा दिया। थोड़ीक ठैरनै बोली, ''औ गोपाळ है नीं, इणनैं तौ म्हैं खुद ई पांच-सात दिन में पाछौ गांव खिणा द्यूंला। बस, यूं समझौ कै गाय जमी, अर गोपाळ गयौ।''

जिण छत रै तळै दो प्राणी हा अचाणचक चार व्हैग्या। घरवाळी जी रौ बेसी टैम गो-गोपाळ सेवा में बीतबा लागौ। म्हारौ लिखणौ-पढणौ छूटग्यौ। आज गाय रै बांटौ लाणौ, आज कुट्टी लाणी, आज रजकै री बंधी बांधणी, आज गाय मांदी पड़गी। जिनावरां रै सफाखानै ले जावणी। चौमासौ छाती चढ्यौ तौ गाय रै टाप घालणी।

घर में पग मेलतां ई नित नूंवौ आदेस। आज गाय रै खातर औ करणौ, आज वौ करणौ। दो किलो शुद्ध दूध माथै जिनगाणी री सगळी खुसियां निछावर व्हैगी। नचींताई कपूर ज्यूं उडगी। म्हैं बेबस हौ।

थोड़ा दिनां पछै घरवाळी कैयौ, ''देखौ, थे तौ दफ्तर चल्या जावौ। मीटिंगां-फीटिंगां में बारै भी जावता ई रैवौ। सिंझ्या रा घरां भी मोड़ा ई आवौ। म्हैं इतरै बडै बंगलै में घबराऊं अेकली। नीं व्है तौ इयां करां कै इण गोपाळ नैं अठै ही राखलां। म्हारै भी बसती रैसी अर छोटा-मोटा काम भी सलटा देसी औ। स्कूल में भरती करा देवांला। विद्यादान रौ पुन्न भी मिलसी थांनै अर टाबर री जिंदगी बण जासी स्हैर में रैवा सूं।''

दान-पुन्न रा मामला में म्हैं म्हारै ससुराजी रै लारै कीकर रैवतौ? पैलां वां कन्यादान अर पछै 'गोदान' रौ पुन्न कीधौ तौ म्हनैं 'विद्यादान' रौ करणौ ई हौ।

पांच-छह महीनां पछै गाय डाकगी। म्हैं सोची कै कठैई घरवाळी पीहर सूं दूजी गाय मंगायनै डेयरी नीं खोलदै। पण म्हारी संका निरमूळ ही। घरवाळी बोली, ''गाय डाकगी है।''

म्हैं कैयौ, ''कोई बात कोनी। डेयरी सूं बंधी कर लेस्यां। अबै तौ गोपाळ है इज। लेय आया करसी।''

पण घरवाळी आपरै पीहर रै किणी प्राणी नैं कष्ट देवण रै पख में नीं ही। वा बोली, ''नीं रैवा दौ। डेयरी वाळा ई किस्यौ घी घालै है? मिनख री नीत में इज मिलावट बापरगी है। थे तो इयां करौ कै उणीज पुराणै दूधवाळै सूं बंधी बांध दौ। थोड़ा दिनां री ई तौ बात है। फेर तौ गाय ब्याय ई जासी।''

अेक बरस रै विवाहित जीवण में सायद पैली बार श्रीमतीजी रा मुखारविंद सूं इमरत जिसी वाणी सुणनै म्हैं अेडी सूं चोटी तांई पुलकित होयां बिना नीं रैय सक्यौ। म्हैं तुरता-फुरती साइकिल उठायनै पुराणा दूधवाळै सूं दूध री बंधी बांधवा निकळ पड़्यौ। म्हनैं संकौ हौ कै कठैई घरवाळी फेर कोई संशोधित आदेश जारी नीं कर देवै।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

तोड़ौ=कमी, अभाव। छनीक=छिन भर, पल भर। गुमेज=अंजस, गौरव। दीठ=दृष्टि। आणै आई=पैली वळा सासरै आयी। बोदौ=पुराणौ, जूनौ। उछेरी=टोरी, भेजी। परेंडौ=पाणी रौ पळींडौ, मटकी राखण री ठौड़। डील=सरीर। दोझा=जिण घर में धीणौ होवै। न्हाळतौ=देखतौ, ढूंढतौ। खिणा द्यूंला=भेज देवूंला। डाकगी=टळगी, दूध देवणौ बंद कर दियौ। इमरत=अमृत।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. लेखक री घरवाळी फेरा सूं पैली कांई सरत राखी ?

   (अ) शुद्ध दूध री वैवस्था (ब)शुद्ध पाणी री वैवस्था

   (स) शुद्ध घी री वैवस्था (द) शुद्ध वातावरण

   ( )

2. लेखक री घरवाळी शुद्ध दूध लावण री पैलपोत वैवस्था कांई करी ही ?

   (अ) डेयरी सूं दूध लावणौ (ब)दूधवाळौ बदळ दियौ

   (स) गाय खरीदली (द) चौहटै सूं दूध लावण री

   ( )

3. लेखक री घरवाळी डेयरी सूं दूध लावण री पैलपोत वैवस्था किणनैं सूंपी ही ?

   (अ) खुद नैं (ब) गोपाळ नैं

   (स) धणी नैं (द) घरै पूगावण वाळा नैं

   ( )

4. पुराणै जमानै में राजा–महाराजा किण रौ दान करता हा ?

   (अ) गऊदान (ब)जमीं रौ दान

   (स) सोनै रौ दान (द) मोहरां रौ दान

   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. लेखक री लुगाई शुद्ध दूध सारू छेवट कांई वैवस्था करी ?
2. घी दूध री नदियां किण देस में बैंवती ही ?
3. लेखक नैं किण बात रौ गरब होयौ ?
4. लेखक जद छह बज्यां उठनै डेयरी सूं दूध नीं ला सक्यौ तौ दूजौ कांई उपाय करीज्यौ ?
5. गाय रै टळ्यां पछै दूध री पाछी कांई वैवस्था करीजी ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. ''ज्यूं–ज्यूं मिळावट बधसी, त्यूं–त्यूं ई शुद्धता रौ आग्रह भी बधतौ रैसी।'' इण बात नैं समझायनै लिखौ।
2. ''जांका घरै दोझा वांका घर सोझा।'' इणरौ अरथ समझावता थकां इणमें छप्योड़ै व्यंग्य रौ खुलासौ करौ।

3. घर में गाय आवण सूं लेखक रौ काम कीकर बधग्यौ ?
4. लेखक री लुगाई आपरै भतीजै गोपाळ नैं स्थायी रूप सूं आपरै अठै राखण सारू कांई बहानौ बणायौ ?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'सवाल शुद्धता रौ' व्यंग्य रचना री भासा-सैली री विसेसतावां उजागर करौ।
2. ''आज तौ हवा मांय भांग घुळगी है।'' इण दीठ सूं मिळावट री समस्या री चरचा करता थकां इणनैं मेटण सारू आपरा सुझाव दिरावौ।
3. आज रै सामाजिक विसंगति रै परिपेख में इण व्यंग्य री महत्ता उजागर करौ।
4. ''मिनख री नीति में इज मिळावट वापरगी है।'' इण कथन रौ खुलासौ करता थकां समाज में फैल्योड़ी इण बुराई नैं रेखांकित करौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. अबै इणी बात नैं इज लोग कैवै है कै पुराणै जमानै में घी-दूध री नदियां बैवती ही। आप ई सोचौ कै जे नदियां में घी-दूध बैंवतौ हौ तौ उणमें पाणी नीं मिळतौ हौ कांई ? आ तौ हौ नीं सकै कै पैलां शक्तिशाली पम्प-सेटां री मदद सूं सगळा नदी-नाळा खाली करीजग्या व्हैला अर पछै उणां में घी-दूधां रा टैंकर खाली कीधा व्हैला।
2. घी-दूध री नदियां बहावण री बातां करणियां आ ई भूल जावै कै जे सगळी नदियां में घी-दूध ई बैंवतौ हौ तौ बापड़ौ जळ कठै बैंवतौ ? कांई खेती-बाड़ी में सिंचाई भी घी-दूध सूं इज होया करती ही। लोग सिनान ई घी-दूध सूं ई करता होवैला वां दिनां में ?
3. केतली आई। डेयरी सूं दूध भी आयौ। सागै ई आयग्यौ जुकाम। चार दिन री सी.अेल.। डेढ-दो सौ रुपिया दवा-दारू में। म्हैं सोची, अब तौ सायद छुट्टी मिळ जासी डेयरी-जातरा सूं। पण छुट्टी म्हारै भाग में कठै ? हां, थोड़ी रियायत मिळगी। संशोधित फरमान जारी होयौ— ''छह बज्यां री जगां सात बज्यां डेयरी पूगौ अर दूजी खेप सूं दूध लावौ।''
4. पण घरवाळी आपरै पीहर रै किणी प्राणी नैं कष्ट देवण रै पख में नीं ही। वा बोली, ''नीं रैवा दौ। डेयरी वाळा ई किस्यौ घी घालै है ? मिनख री नीत में इज मिलावट बापरगी है। थे तो इयां करौ कै उणीज पुराणै दूधवाळै सूं बंधी बांध दौ। थोड़ा दिनां री ई तौ बात है। फेर तौ गाय ब्याय ई जासी।''